

उद्यमः सारुसं धैर्यं बलं बुद्धिः पराक्रमः । षडेते यस्य तिष्ठति Spr. (II) 1247. 2756. तस्य च द्वे डुक्लिता यौवनस्थे तिष्ठतः PAÑĀT. 183, 25. PAÑĀT. ed. orn. 4, 8. यत आवयोर्भक्तशेषाकारः प्रचुरस्तिष्ठति Hit. 50, 21. निक्षेपो मे ऽश्चर्यदयं त्वयि तिष्ठतु (so ed. Bomb.) MBh. 3, 2836. 12275. इदं चैव ह्यज्ञानं तदीयं मयि तिष्ठति 3025. R. 1, 66, 5. — 13) *geheftet* —, *gerichtet sein auf* (loc.): मनस्तिष्ठति कात्तासु चित्रासु वनरात्रिषु Hariv. 3841. त्वयि नस्तिष्ठते प्रीतिः BHATT. 8, 12. — 14) *ruhen* —, *beruhen auf*, *gegründet* —, *beschlossen sein in* (loc.): यस्मिन्विज्ञानि भुवनानि तस्युः RV. 7, 101, 4. 1, 164, 36. VS. 31, 19. AV. 6, 138, 4. धर्मे तिष्ठति भूतानि धर्मो राजनि तिष्ठति Spr. (II) 3130. med. P. 4, 3, 23. त्वयि तिष्ठते विवादः Vop. 23, 8. मयि स्थित्वा so v. a. *sich auf mich verlassend* Comm. zu BHATT. 8, 9. — 15) *Jmd still halten zu Etwas, sich fügen in, dienen zu*; mit einfachem oder doppeltem dat.: एवैव तस्युः सवितः सवार्यं ते RV. 4, 54, 5. अस्मा अर्पस्तस्युः 8, 85, 1. 9, 62, 27. न संदशे तिष्ठति द्वयमस्य Çveritç. Up. 4, 20 = KATHOP. 6, 9 = MBh. 5, 1747 (hier सादृश्ये und दर्शने [ed. Bomb.] st. संदशे). med.: अतिष्ठतास्मै ज्यैष्ठ्याय TBa. 1, 3, 2, 2. देवेभ्यः पशवो ऽनाद्यायालम्भायतिष्ठतः At. Br. 2, 3. 4, 25. 6, 5 (तस्यानानि zu lesen; vgl. Ind. St. 9, 295). 7, 18. अग्निं Çat. Br. 3, 4, 2, 9, 4, 2. सर्वं वा इदमिन्द्राय तस्थानमास 4, 14. fg. 12, 2, 2, 8. 5, 4, 1. fgg. अज्ञानं परिपाषाणं तस्थिषे AV. 4, 9, 2. — 16) *erstehen aus* (abl. oder gen.): श्रोतिस्तमसो व्युनोवदस्यात् RV. 4, 51, 1. एतस्य वै सौम्येयो ऽणिम एव मरुत्यमोघास्तितिष्ठति Khand. Up. 6, 12, 2. — 17) *abstehen von Etwas, sich eines Bessern besinnen*: यदि ते तु न तिष्ठेयुरूपयैः प्रथमेन्निभिः M. 7, 108. अर्पिदानीं मम सुतास्तिष्ठेरन्मन्दचेतसः MBh. 3, 1946. — 18) *dahingestellt* —, *unberücksichtigt* —, *unerörtet bleiben, nicht von Belang sein*; nur im imperat.: तिष्ठतु प्रणयः so v. a. *daraufkommt es zunächst nicht an, davon will ich vorläufig absehen* Māñkū. 24, 18. Ragh. 11, 77. Kumāras. 6, 24. अभिमुखकृतस्य तिष्ठतु तावज्जयो ऽथ वा स्वर्गः Spr. (II) 499. 1043. लोकः शुभस्तिष्ठतु तावदन्यः Z. d. d. m. G. 27, 82. BRAHMA P. in L.A. (III) 51, 4. पयनाख्येयं तत्तिष्ठतु PAÑĀT. 19, 17 (ed. orn. 16, 12). इति तिष्ठतु तावत् Çāñk. zu Brh. År. Up. S. 161. 174. — 19) *partic. तस्थिर्वत्सु* P. 6, 2, 67. Schol. a) *stehend* RV. 4, 108, 1 (auf dem Wagen). गवि तस्थिर्वासं केसरिणाम् Ragh. 2, 29. *was steht, — sich nicht bewegt* (Gegens. जगतु) RV. 7, 32, 22. 66, 15. 101, 6. जगतस्तस्थुषां अष्टः MBh. 2, 1214. Hariv. 9649. Bhāg. P. 3, 10, 18. 13, 41. 4, 22, 37. 23, 2. 7, 3, 29. — b) *sich befindend in* (loc.): अग्निं पदे पदे तस्थिर्वासं RV. 4, 72, 4. बले मरुति so v. a. *im Besitz seiend* Hariv. 3064. — c) *beschäftigt mit* (loc.), *obliegend*: तस्थुषश्चार्चनं राज्ञो भृत्यान् Rīśā-Tar. 3, 370. विपक्षभावे Ragh. 3, 62. पितुः शासने so v. a. *dem Vater gehorchend, — folgend* 11, 65. *verharrend in* (instr.): प्राणायामेन MBh. 3, 165. — d) *der inne gehalten hat*: रक्षतामिति चोक्त्वा वै तथास्त्विति च तस्थिवान् so v. a. *schwiege er* Hariv. 10219. — e) *ausharrend, beharrlich*: स कृत्वा सर्वकार्याणि प्रतस्थे तस्थुषां (= स्थितिमतो Nilak.) वरः MBh. 2, 32. — f) *bereit zu* (dat.): प्रतिपुङ्गाय Hariv. 5667.

— caus. स्थापयति, अतिष्ठयित् P. 7, 4, 5. Vop. 18, 9. 1) *stillstehen machen, anhalten* Kauç. 106. रथम् Çāñk. 6, 16. 8, 10. 100, 19. Vikr. 10, 19. so v. a. *hemmen, unterdrücken*: रेतः प्रजातिम् Çat. Br. 7, 3, 4, 44. पाप्मानम् 13, 8, 4, 6. — 2) *Jmd festhalten, nicht fortlassen* KATHAS. 14, 10. 37, 103.

VII. Theil.

Hit. 121, 14. स च दत्त्वा धनं भूरि स्वीकृत्य स्थापितो मया so v. a. *ich habe ihn ganz für mich gewonnen* KATHAS. 13, 8. बद्ध्वा Jmd gefangen halten 28, 145. Rīśā-Tar. 2, 4 (wo wir बद्धेत्य^o lesen). तं संयम्य स्थापयामास निगडैर्दृढम् KATHAS. 37, 40. — 3) *wegstellen, bei Seite stellen*: रथम् MBh. 3, 2870. KATHAS. 20, 164. नारसिंहं वपुस्त्यक्त्वा स्थापयित्वा च तदपुः Hariv. 12897. अहो न स्थापितं किंचिद्वया गुणवराकृते bei Seite gelegt, zurückgelegt, aufbewahrt KATHAS. 39, 14. इह केनापि दत्तानि प्राप्य पञ्च फलानि सः । नुत्तामस्त्रीणि मे प्रादाद्दे चास्थापयदात्मने ॥ 70. 32. स्थापयित्वा so v. a. *mit Ausnahme von* Lot. de la b. l. 394. — 4) *stellen, hinstellen, setzen* —, *legen* —, *thun auf, in* (loc.): स्थापित् AV. 6, 77, 1. 7, 96, 1. Çat. Br. 3, 5, 2, 19. उत्सङ्गे मातुः कुमारकम् Çāñk. Gaur. 5, 7. Kāñ. Ça. 7, 9, 83. 15, 6, 13. प्राशुखं वरासनम् R. 4, 23, 30. अमात्यमुष्यमासने M. 7, 141. सिंहासने ऽच्युतम् MBh. 5, 5006. सेनयोरुभयोर्मध्ये रथम् Bhāg. 1, 21. उरसि मणिम् MBh. 14, 2390 (med.). 2391. पयो नवे भाण्डे 2888. Hariv. 7904. 8419 (med.). पार्श्वे रत्नावलीम् Māñkū. 74, 20. कौषेयके मणिम् Vikr. 78, 7. तस्मादृतं च वक्त्रं च नैकत्र स्थापयेद्बुधः Spr. (II) 2217. Varāh. Brh. S. 35, 23 (स्थाप्यं Druckfehler für स्थाप्य). KATHAS. 10, 108. 13, 154. 22, 195. 24, 166. 28, 166. 60, 28. 94, 36. ब्रह्माद्या देवतास्तत्र WEBER, KṚSHNAG. 272. 276. 278. 284. 296. Vorz. d. Oxf. H. 62, b, 9. fgg. Çāñk. zu Brh. År. Up. S. 23. Bhāg. P. 4, 4, 25. Hit. ed. Jouns. 2417. गा निगूढे कस्मिंश्चित्पतेति Sā. zu RV. 3, 31, 5. हृदि so v. a. *dem Herzen einprägen* PAÑĀT. 13, 7. ब्राह्मणस्य गृहे तत्र कस्यचित्स्थापितो द्विजः so v. a. *einquartiert* KATHAS. 33, 134. 65, 169. गुत्मान् hinstellen, aufstellen M. 7, 190. वधकान्देवीगर्भकान्तरे KATHAS. 3, 39. रत्नाञ्जायतो निशि कोशात् 43, 32. — 5) *Jmd einsetzen in eine Würde, ein Amt* (loc.) M. 7, 202. R. Gorr. 2, 87, 18. 4, 23, 7. Spr. (II) 3024. राज्ञे MBh. 3, 234 (med.). 13, 4215. R. Gorr. 1, 3, 36. 2, 6, 22 (स्थापयता zu lesen). 3, 34, 19. 4, 54, 20. Bhāg. P. 3, 3, 16. यौवराज्ये MBh. 13, 1975. स्थापत्ये R. Gorr. 4, 12, 6. मन्त्रिणे KATHAS. 5, 124. मध्यस्थाने Dhūrtas. 92, 3. रत्नार्थम् so v. a. *als Hüter* KATHAS. 24, 7. — 6) *Jmd versetzen* —, *führen* —, *bringen in, auf* (loc.): पथि *auf den rechten Weg* Jāñ. 1, 360. युधि Kām. Nitir. 19, 22. प्रकृतौ Ragh. 8, 75. वशे M. 7, 44. MBh. 1, 683. R. 3, 47, 8. 9. 4, 32, 19. 7, 20, 19. Kām. Nitir. 8, 83. Bhāg. P. 9, 19, 23. स्वे निदेशे (v. l. नियोगे) Mālav. 49. संशये R. 7, 9, 11. 12, 2. समये Māñk. P. 51, 111. चलतः स्वधर्मेषु 69, 61. R. Gorr. 4, 1, 99. नये so v. a. *einweihen in einen Plan* KATHAS. 20, 195. इत्येवं स्थापयेन्मनः *man richte den Geist darauf d. i. man vergegenwärtige sich dieses* Spr. (II) 1998. statt des loc. ausnahmsweise auch acc.: सरितां च पतिः सत्यां मर्यादां स्थापितः पुरः R. Gorr. 2, 11, 5. दुःखम् (vielleicht दुःखे st. दुःखं zu lesen) KATHAS. 52, 28. — 7) *übergeben*: ज्येष्ठे राजपुत्राणि R. 2, 8, 24. मध्यस्थ-स्थापितं धनम् *einem Unbetheiligten* Jāñ. 2, 44. भर्त्रा स्थापितं धनम् KATHAS. 4, 65. भर्तृस्थापितं vom Gatten 44. तस्य कृस्ते तदीया सा गृहिणी स्थापिता मया 10, 163. 16, 22. स्थापित = *न्यस्त* H. an. 3, 312. Med. t. 170. — 8) *errichten, erbauen*: eine Stadt MBh. 1, 3787. Vorz. d. Oxf. H. 62, b, 11. चैत्यान्यायतनानि च R. 2, 36, 29. निवेशान् 80, 17 (87, 21 Gorr.). वेदीम् R. Gorr. 4, 33, 7. — 9) *Bestand geben, befestigen, dauerhaft machen, begründen* MBh. 13, 4161. Spr. (II) 5149. KāraKa 3, 8. संधीन् Suçr. 2, 28, 8. वयः 196, 7. वंशम् R. 4, 1, 92. 6, 104, 6. Bhāg. P. 9, 22, 17. राज्यम्

81*